श्रीनाम और धाम परत्व।

(अनन्त श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज)

ब्यर्थ बात पै धिकार लोक लाज पै धिकार, राज साज पै धिकार बाम दाम पै धिकार है। बिश्व हर्ष पै धिकार कारबार पै धिकार, खान पान पै धिकार शान मान पै धिकार है॥ फ़र्श फ़ौज पै धिकार रिद्धि सिद्धि पै धिकार, धौलहर पै धिकार वेद प्रगट पुकार है। जीव जान पै धिकार 'युग्म' संपदा धिकार जो

पै कियो ना उचार राम नाम सुख सार है ॥ १ ॥

ज्ञान ध्यान पै धिकार योग यज्ञ पै धिकार, नेम धर्म पै धिकार स्यान पन पै धिकार है। काव्य कोष पै धिकार बुद्धि बाग पै धिकार, लोक रंजना मिलत करतब पै धिकार है ॥ स्वर्ग नर्क पै धिकार तीव्र तर्क पै धिकार, तेज अर्क पै धिकार बिद्याबाद पै धिकार है। हैं ए सब सांच स्वच्छ राम नाम प्रेम पक्ष, सहित रहित साधन पै धिकार है॥ २ ॥

सहस सुमेर सम तूल एक कन आग, दाहन अदेर इह उपमा सुथल के। कोटिन बरष तक जोरयो धन रंक भूप, पलक खरचके समान नहीं भलके ॥ अमित शृगाल पशु होहिं यक ठाहीं तऊ, भिरि न सकत सिंह सनमुख चलके। 'युगल अनन्य' रामनाम जारै पाप ताप, कहां तक पापी पाप करै बिना बलके ॥ ३ ॥

अवध सुधाम के स्वपच पूतताई पर, वारिए अनंत मुनि महत अचार को। अवध हलालखोर

ऊपर अनेक देव, दिव्य वारि डा-
रिए न लाइए बिचारको ॥ अवध
निवासी कीट पतँग परत्व पर
कीजिए निछावर गरुड़ बेगसार
को। 'युगल अनन्य' अपराजिता
प्रताप पर, वारिए हमेश ईश ईश-
ता अपार को ॥ ४ ॥

अवध परवान कंकरादिक प्र-
काश पर, वारिए अनन्त सूर शशि
दुति दारको। अवध कषाय पर
वारिए समाधि बोध, अवध वि-
रोध पर वारौं समसारको ॥ बि-

मल बैकुण्ठ बन कल्प तरु बाग-
बर, वारौं अवध सूख तृन ऊपर
बिहार को।'युगल अनन्य' सीता
राम धाम बास पर, वारिए असं-
ख्य साध्य साधन बिचारको ॥५

जैसे जग जाल बीच बाल
बुद्धि बूड़ि रहे, कढ़त न काढ़े किए
यतन अथाहिए । जैसे बुध वि-
द्या बाद छूटि न सकत बैश
बृद्धताहू भए और जन्म अवगा-
हिए ॥ जैसे बित बासना कदर्य
मन मांझ दृढ़, भोर सांझ वाही

संग अंग दिल दाहिए। 'युगल अनन्य' कटि कसिके अखंड नित ऐसे श्री अवध में निवास कियो चाहिए ॥ ६ ॥

कौशलेश कलित कृपाल काल जाल हर,नवधा अधिकारी कहौ केवल ललामलर। प्रगट परिक्षितसुव्यास सुनु प्रहलाद,कमला नृपेश पृथु जानिए उमङ्ग उर॥ अकरूर वन्दन सुदास्य कपिराज सख्य,बीज अरजुन बलि आत्मा निवेद कर।'श्रीयुगलानन्य' मिलि कीन्ही मैं निरूप गोप,रहसन जानिबे के जोग मुद मोद घर। ७।